'सम्पूर्णता वर्ष'

सम्पूर्ण निश्चय सप्ताह

02.03.2014

1. **स्वमान** – मैं ब्रह्मा बाप समान सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि विजयी आत्मा हूँ।

ब्रह्मा बाप समान निश्चयबुद्धि अर्थात् –

- हर जिम्मेवारी सम्भालते हुए यह समझना कि यह बाप की जिम्मेवारी है, मैं निमित्त हूँ।
- किसी भी परिस्थिति में सदा समर्थ संकल्प में रहना। किसी भी बात में संकल्प मात्र भी यह संशय नहीं कि यह होगा या नहीं...

2. **योगाभ्यास** –

अ. ` निश्चय का अर्थ सिर्फ यह नहीं कि मैं शरीर नहीं, आत्मा हूँ। लेकिन मैं कौन सी आत्मा हूँ - यह स्वमान समय पर अनुभव हो। सदा इसी स्वमान में रहो कि मैं विजयी आत्मा, `पास विद् ऑनर` होने वाली आत्मा हूँ।`

ब. `मैं निमित्त करनहार हूँ, करावनहार बाप है - इस निश्चय से डबल लाइट अर्थात् लाइट के ताजधारी बन बेफिक्र बापदशाह बनो। जब ऐसे बेफिक्र बादशाह अर्थात् राजा बनेंगे तब मायाजीत, कर्मेन्द्रियजीत, प्रकृतिजीत बन सकेंगे।`- **शिवभगवानुवाच**

3. **धारणा – निश्चयबुद्धि**

- `निश्चय के फाउण्डेशन के 4 स्तम्भ हैं। बाप में निश्चय के साथ-साथ अपने श्रेष्ठ स्वमान को, ब्राह्मण परिवार को और इस पुरुषोत्तम युग के समय के महत्व को यथार्थ जानना, मानना और उसी प्रमाण चलना ही सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि बनना है।` – **बापदादा**

4. **चिंतन** –

- निश्चयबुद्धि विजयन्ति और संशयबुद्धि विनश्यन्ति क्यों कहा गया है ?
- संशय क्यों उत्पन्न होता है और उससे क्या-क्या नुकसान होते हैं ?
- सदा ब्रह्मा बाप समान सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि कैसे बनें ?

5. **तपस्वियों प्रति** – प्रिय तपस्वियों ! हम सभी ब्रह्मावत्सों का एक ही लक्ष्य है अपने प्यारे पिता ब्रह्मा बाबा के समान बनना। इसके लिए हमें उनके कदम पर कदम मिलाकर चलना होगा, जैसे कर्म उन्होंने किए वैसे ही कर्म हमें भी करना होगा, जैसा उनका जीवन था उसे अपने जीवन में उतारना होगा। तो आयें, ब्रह्मा बाबा के हर कदम पर हम गहराई से विचार करें और उसे अपने आचरण में लायें ताकि अपने पिता के समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनकर हम उनकी आशाओं को पूर्ण कर सकें।